उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा "अ" (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर | केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर [redacted]

नोट—केन्द्र के नाम की मुहर [redacted] भी भाग पर न लगाएं।

नोट—परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या—	$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—				

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा—

अनुक्रमांक (अंकों में)—

अनुक्रमांक (शब्दों में)—

विषय—

प्रश्नपत्र संकेतांक—

परीक्षा का दिन—

परीक्षा तिथि—

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय—

केन्द्र संख्या—

परीक्षा कक्ष संख्या—

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम—

दिनांक—

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न—पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्रा की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या..

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या
2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक—

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक—

त्रुटि का प्रकार—

दिनांक—

हस्ताक्षर निरीक्षक—

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)— योग (अंकों में)

प्रश्न :- 1

उत्तर :-

संस्कृतिकरण -

"जब निम्न जातियाँ उच्च जातियों के कार्यो रीती-रिवाजो एवं उनकी धार्मिकता को ग्रहण कर अपना सामाजिक स्तर उच्च उठाने के लिए प्रयास करते है तो यह प्रक्रिया संस्कृतिकरण कहलाती है।" दूसरे शब्दो मे संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसमे निम्न जातिया उच्च जातियो व वर्गो के पेशो को ग्रहण कर अपनी सामाजिक स्थिति उच्च बनाते है।

प्रश्न :- 2

उत्तर :-

ब्रह्म समाज -

ब्रह्म समाज की स्थापना 10 अप्रैल 1828 में कलकत्ता मे 'राजा राम-मोहन राय' द्वारा की गई। ब्रह्म समाज का उद्देश्य- सती प्रथा, बाल-विवाह स्त्रियों की शिक्षा पर बल, पुनर्विवाह के पक्ष मे आन्दोलन, पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार पर बल, देश के विभिन्न भागों मे शिक्षण संस्थाओ की स्थापना करना था ब्रह्म समाज की स्थापना मे 'द्वारकानाथ टैगोर' का नाम भी प्रमुख माना जाता है। ब्रह्म समाज ने समाज मे व्याप्त कुरीतियो का जोरदार खण्डन किया।

प्रश्न :- 3

उत्तर :-

गुरु नारायण का जन्म 20 अगस्त 1856 में तिरुवंतपुरम् (केरल) में हुआ। इन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किये जिनमे मुख्य थे - जाति प्रथा के महत्व में कमी तथा 'जातिभेद निवारक संघ' की स्थापना की।

प्रश्न :- 4

उत्तर :-

पण्यीकरण :-

पण्यीकरण से आशय जो वस्तु पहले बाजार मे बेची या खरीदी न जाती हो लेकिन कुछ समय पश्चात् वह बेची जा सकती हो। पण्यीकरण तब होता है जब वस्तु पहले न बिकती हो और फिर वह बिकने लगी और इस प्रकार बाजारी अर्थव्यवस्था का भाग बन जाए। उदाहरणार्थ - पहले गाँव में श्रम के बदले श्रम अर्थात् अनाज के बदले अनाज लेते थे। श्रम और कौशल बाजार मे नहीं बिकते थे लेकिन अब अनाज के बदले पैसे देने की प्रक्रिया प्रचलित है। संक्षेप पहले न बिकने वाली वस्तु का बाजारी बन जाना अर्थात् उसका बाजार मे बिकने लग जाना।

प्रश्न :- 5

उत्तरः-

साम्प्रदायिकता का अर्थ -

धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद को सामान्य बोलचाल की भाषा में 'साम्प्रदायिकता' कहा जाता है। उग्रवाद एक ऐसी मनोवृत्ति है जिसमें व्यक्ति अपने धर्म को श्रेष्ठ या वैध-समूह मानता है और अन्य धर्मों की अपेक्षा करता है। साम्प्रदायिकता व्यक्ति को अपने धर्म को अधिक श्रेष्ठ मानता है और अन्य धर्मों की उपेक्षा करता है।

प्रश्न :- 6

उत्तरः-

सांस्कृतिक विविधता -

सांस्कृतिक विविधता से तात्पर्य किसी समाज की संस्कृति में पाया जाने वाले अन्तरों से है। 'विविधता' शब्द असमानताओं के स्थान पर 'अन्तर' पर बल देता है। उदाहरणार्थ-जब हम यह कहते हैं कि भारत में सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है तो उसका सम्बन्ध वहाँ पाये जाने वाले विभिन्न वर्गों समुदायों की अलग-अलग संस्कृति से है। यह किसी एक समुदाय तक सीमीत नहीं वरन् इसका सम्बन्ध सभी पक्षों और सभी वर्गों से है।

प्रश्न :- 7

पश्चिमीकरण :-

पाश्चिम जगत की संस्कृति को ग्रहण कर लेना ही 'पाश्चिमीकरण' कहलाता है। पाश्चिम जगत मे भौतिकवाद का स्थान है। जब गैर-पाश्चिमी देश पाश्चिम जगत के रीति-रिवाजों, वेशभूषा, आचार-व्यवहार को ग्रहण करते है तो यह प्रक्रिया 'पाश्चिमीकरण' कहलाती है।

प्रश्न :- 8

उत्तर :-

जमीदारी व्यवस्था मे प्रतीक उच्च जाति के पास भूमि का आधिपत्य था। स्थानीय सोपान मे इन्हे प्रभु जाति कहा जाता था। जमींदारी व्यवस्था तीन प्रकार की - (i) रैयतवाड़ी व्यवस्था (ii) महालवाडी व्यवस्था (iii) जमींदार व्यवस्था। जमींदारी व्यवस्था ने निम्न वर्गो के लोगो का आर्थिक शोषण किया इसलिए जमींदारी व्यवस्था उन्मूलन कर दिया गया।

प्रश्न :- 9

उत्तर :-

संविधान :-

संविधान उन लिखित या अलिखित नियमो का संग्रह है जो राज्य की बनावट उसका ढाँचा निर्धारित करती है। नियमों तथा सिद्धान्तो के इस संग्रह को जो राज्य की संरचना

तथा बनावट प्रदान करता है। संविधान की आंग्ला भाषा के 'कान्स्टीट्यूशन' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। कान्स्टीटयूशन शब्द का प्रयोग मानव शरीर के ढाँचे के लिए किया जाता है। राजनीति विज्ञान में इसका प्रयोग राज्य की बनावट व ढाँचे के लिए किया जाता है।

प्रश्न:-10

उत्तर:—

विनिवेश प्रक्रिया निवेश का उल्टा होता है। निवेश यानी किसी कम्पनी, संस्था, परियोजना मे लगाया गया धन विनिवेश यानी इस धन को वापस निकालना 'विनिवेश' कहलाता है। विनिवेश ने रोजगार के प्रतिमानो को प्रभावित किया है। रोजगार के लिए कार्यरत विभिन्न कम्पनी में शेयरों को दूसरी कम्पनीयों के शेयर खरीद लिए है। रोजगार में यह प्रक्रिया शेयरो पर विपरीत प्रभाव डालती है।

प्रश्न:-11

उत्तर:—

खदानों मे काम करने वाले कामगारो को खदान की ऊपरी सतह मे धसँने परत के गिरने जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है भूमिगत कारखानो मे काम करने वाले व्यक्तियो को धूप गर्मी वर्षा मलवा के गिरने का खतरा होता है। कभी-कभी गैसो के उत्सर्जन के कारण व्यक्तियों को 'सिलिकोसिस' जैसी साँस की खतरनाक बीमारी हो जाती है

प्रश्न:- 12

उत्तर:-

उदारीकरण का भारतीय उद्योगों पर-
प्रभाव:-

उदारीकरण ने भारतीय उद्योगों को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित किया -

(i) खाद्यान्न आपूर्ति मे उद्योगो मे उत्पादन तीव्र गति से होने लगा।

(ii) उदारीकरण ने ही औद्योगीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।

(iii) उदारीकरण के कारण भारतीय स्वचालित उद्योगो पर शनैः शनैः शिथिलीकरण होने लगा।

प्रश्न:-13

उत्तर:-

'दि टाइम्स ऑफ इण्डिया' का प्रकाशन दिल्ली से प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन 1946 मे स्वतन्त्र प्रेस के रूप मे हुआ। इसके सम्पादकों का प्रमुख उद्देश्य समाज के शिक्षित वर्गों मे शिक्षण संचार बढ़ाने के लिए किया गया। दिल्ली मे प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रो मे यह सबसे पहला समाचार-पत्र था।

प्रश्न :- 14

उत्तर :-

चिपको आन्दोलन :-

हिमालय की तलहटी से प्रारम्भ यह आन्दोलन सर्वप्रथम गोपेश्वर मे सम्पन्न हुआ । तत्पश्चात् रैनी, म्यूडार, डूंगरी पैंतोली मे भी सम्पन्न कराया गया। चिपको आन्दोलन पर्यावरण बचाव से सम्बन्धित था । चिपको आन्दोलन के साथ 'गौरा देवी' और 'सुन्दरलाल बहुगुणा' का नाम जुड़ा है । यह वन-नीति की रक्षार्थ हेतु चलाया गया तथा वनो के कटान पर रोक लगायी गयी । वन-नीति की ठेकेदारी को पूर्णता समाप्त कर दिया गया था ।

प्रश्न :- 15

उत्तर :-

सामुदायिक भावना का अर्थ -

प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित समुदाय होता है। प्रत्येक व्यक्ति एक निश्चित समुदाय मे जन्म लेता है । सामुदायिक भावना का अर्थ है अपने समुदाय की प्रति निष्ठा की भावना तथा एक-दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यो के निर्वहन की प्रेरणा । समुदाय के परस्परव्यापी दायरे ही हमारी दुनिया को सार्थकता प्रदान करते है और हमे बताते है कि हम कौन है । यह हमे एक

निश्चित पहचान देते है।

प्रश्न :- 16

उत्तर :-

जाति की परिभाषाएँ -

जाति कुछ विशेष सांस्कृतिक प्रतिमानों को मानने वाला समूह है जो अपनी समूह मे रक्त शुद्धि होने का विश्वास करता है।

चार्ल्स कूले के अनुसार ⟶ " जब एक वर्ग आनुवांशिक होता है, तो हम उसे जाति कहते हैं।"

मजूमदार के अनुसार ⟶ " जाति एक बन्द वर्ग है।"

जाति की विशेषताएँ ⟶

1. जन्म पर आधारित सदस्यता ⟶
जाति की सदस्यता जन्म से व्यक्ति जिस जाति मे जन्म लेता है प्राप्त कर लेता है। जन्म लेने के उपरान्त व्यक्ति जीवनभर उसी जाति का सदस्य बन जाता है और उम्रभर उस सदस्यता का त्याग नही कर सकता।

2. निश्चित स्थिति व कार्य →
प्रत्येक जाति की स्थिति निश्चित होती है तथा उनके कार्य भी समाज द्वारा निश्चित होते है। व्यक्ति इन्ही परम्परागत व्यवसायो को अपनाता है।

3. अपनी संस्कृति →
प्रत्येक जाति के अपने अलग - अलग रिती - रिवाज होते है तथा प्रत्येक जाति अपनी संस्कृति के प्रति सचेत होते है।

4. खान - पान पर प्रतिबन्ध →
प्रत्येक जाति निम्न जातियो के साथ खान - पान पर प्रतिबन्ध लगाती है। प्रायः उच्च जातियाँ निम्न जातियो के यहाँ खाना - पीना पसन्द नही करती।

5. अन्तर्विवाही समूह →
प्रत्येक जाति का सदस्य अपनी ही जाति मे विवाह करता है। इसलिए जाति को अन्तर्विवाही समूह कहा जाता है।

प्रश्न :- 18

उत्तर:-

73 वे संविधान संशोधन ने भारतीय पंचायतों को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया है। इसे 'पंचायत अधिनियम 1993' के नाम से भी जाना जाता है। इस संशोधन के उपरान्त पंचायतो मे स्त्री तथा बच्चो के लिए स्थान सुरक्षित करवाये गए।

73 वाँ संविधान संशोधन :-

सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि इस संशोधन ने पंचायतो की ये मुख्य कार्य सौपे है-

(i) लघु वानिकी तथा कृषि वानिकी
(ii) मुर्गी पालन, पशुपालन
(iii) ईंधन व चारे की उचित तथा समयानुसार व्यवस्था
(iv) प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लागू कराना
(v) विद्युत वितरण
(vi) रेलमार्गी सड़के पुलियाँ आदि बनवाना।
(vii) जनसंचार माध्यमों की व्यवस्था करना।
(viii) मेलो तथा प्रदर्शनियों की व्यवस्था करना
पुस्तकालय खोलना।

संविधान संशोधन के उपरान्त सभी जगह त्रि-स्तरीय प्रणाली लागू की गई। ग्राम पंचायत, ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति, जिला स्तर पर जिला पंचायत प्रणाली को अपनाया जाए। 73 वे संविधान संशोधन से पूर्व ग्राम पंचायते विकास कार्यों को कार्यान्वित करने वाला संगठन मात्र थी परन्तु संशोधन के उपरान्त वह निर्णय लेने वाली संस्था बन गई। प्रत्येक 5 वर्ष के बाद चुनाव कराये जाते है महिला व बच्चों के लिए पंचायत मे स्थान आरक्षित कराये गए। इस प्रकार 73 वे संविधान संशोधन ने पंचायतो के कार्य तथा शक्तियों को विस्तृत कर इसे संगठित और नियोजित बना दिया है।

प्रश्न:- 19
उत्तर:-

हरित क्रांति के सामाजिक परिणाम:-

1. किसानो में स्वावलंबन →
हरित क्रान्ति ने उत्पादन में वृद्धि की है जिस कारण किसानो मे स्वावलंबी बनने की इच्छा जागृत हुई है।

2. कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि →
कृषि के क्षेत्र मे मशीनो के आ जाने से तथा विभिन्न रासायनिक खादो के प्रयोगो से कृषि उत्पादन मे आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है।

3. पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति →
हरित क्रांति से किसानो मे कृषी यन्त्रीकरण के कारण उत्पादन बढ़ा है जिससे उनके परिवारो की आवश्यकता सरलता से पूरी होने लगी है।

4. उच्च आर्थिक विकास –
हरित क्रान्ति ने उत्पादन को बढ़ाकर बाजारो मे ला दिया है अब प्रत्येक बहुफसली को अपनाकर किसान अपना तथा समाज का उच्च आर्थिक विकास किया है

प्रश्न:- 20

स्वंतत्र भारत मे मास-मीडिया की अहम् भूमिका है। मास-मीडिया ने जनसंचार क्षेत्र मे क्रान्ति ला दी है।

मास-मीडिया के प्रमुख साधन निम्नलिखित है -

समाचार पत्र -

1. समाचार पत्र प्राचीन तथा विश्वसनीय जनसंचार साधन है। समाचार पत्र हर प्रकार की खबरें व्यापार सम्बन्धी खेल-सम्बन्धी, वैवाहिक-विज्ञापन आदि खबरें होती है।

रेडियो -

2. यह जनसंचार माध्यम अशिक्षित व्यक्तियों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। वे इसमें हर प्रकार की खबरें सुन सकते है।

समाचार पत्र अथवा मास मीडिया की भूमिका :-

मास मीडिया ने व्यक्ति की प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान किया है। मास मीडिया जहाँ एक ओर समाज पर नियन्त्रण रखती है वही दूसरी ओर शासन पर भी नियन्त्रण रखने में सक्षम है। उदाहरणार्थ - नेताओं की भ्रष्टाचारी का पर्दा हटाकर उनके अनैतिक कार्यों को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। स्वंतत्र भारत में मास मीडिया ने क्रांति ला दी है टी.वी, रेडियो, समाचार पत्र, 'इन्टरनेट' के आ जाने से तो इसका स्वरूप ही बदल गया है। मास-मीडिया व्यक्ति को प्रत्येक घटनाओं या खबरों को तत्काल प्रदर्शित कर देती है।

प्रश्न :- 2।

उत्तर :-

कृषक समाज कृषकों की प्रधानता वाला समाज है। कृषक समाजों में थोड़ी - बहुत आर्थिक - असमानताएँ पायी जाती है परन्तु यह एक अस्तरीकृत और अविभेदीकृत समुदाय है। कृषक आन्दोलन तथा नव किसान आन्दोलनों के मध्य अन्तर निम्नलिखित है -।

(i) कृषक आन्दोलनों में कम गतिशीलता पायी जाती है, परन्तु नव किसान आन्दोलनों में अधिक गतिशीलता पायी जाती है।

(ii) कृषक आन्दोलनों का क्षेत्र संकुचित होता है इसके विपरीत नव किसान आन्दोलनों में व्यापकता है।

(iii) नव कृषक आन्दोलन मुख्य रूप एक समिति द्वारा चालित होते थे। कृषक आन्दोलनों का मात्र कुछ व्यक्तियों का समूह होता था।

(iv) कृषक समाज अस्तरीकृत समुदाय है जबकि नव किसानों में प्रायः स्तरीकरण पाया जाता है।

(v) कृषक आन्दोलनों की उद्देश्य कृषि क्षेत्रों के विस्तार पर रोक न लगायी जाए से सम्बन्ध था। परन्तु नव किसान आन्दोलन एक निश्चित बहुफसली प्रणाली को अपनाने पर जोर देता है।

प्रश्न :- 22

उत्तर :-

जनसंख्या संक्रमण अवधि के साथ जुड़ी हुई है। जनसंख्या अवधि में जनसंख्या विस्फोट पाया जाता है।

जनसांख्यिकी संक्रमण का बुनियादी तर्क :-

जनसांख्यिकी संक्रमण का बुनियादी तर्क यह है कि जनसंख्या में वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी हुई है तथा प्रत्येक राष्ट्र जनसंख्या वृद्धि के निश्चित स्वरूप का अनुसरण करता है। जनसांख्यिकी संक्रमण के बुनियादी तर्क के साथ निम्नलिखित तीन तर्क जुड़े हुए है -

1. जन्म दर तथा मृत्यु दर दोनों का बहुत उच्च हो जाना जिसमें मृत्यु दर निम्न होती है।
2. संक्रमणकालीन अवस्था में जन्म-दर अधिक होती है।
3. जन्म दर तथा मृत्यु दर दोनों का बहुत कम हो जाना जिससे मृत्यु दर में कमी आती है।

जनसांख्यिकी संक्रमण में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पायी जाती है। उच्च चिकित्सा सुविधाओं के कारण मृत्यु दर में तो कमी आ जाती है, परन्तु जन्म-दर- में निरन्तर वृद्धि होती है। जनसंख्या संक्रमण में 'जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पायी जाती है।

प्रश्नः- 23

उत्तरः-

औद्योगीकरण का अर्थः-

औद्योगीकरण आर्थिक क्षेत्र की उस प्रक्रिया का नाम है जिसमें छोटे-छोटे उद्योग धन्धों के स्थान पर बड़े-बड़े उद्योग धन्धे कल-कारखानों द्वारा विकसित होते है। औद्योगीकरण मे मशीनों के प्रयोग पर बल दिया जाता है। प्रत्येक राष्ट्र के पास अपनी प्राकृतिक सम्पदा (तेल, कोयला, खनिज) है। जब इन प्राकृतिक सम्पदाओं से विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ मशीनों की सहायता से बनाई जाती है तो इस प्रक्रिया को हम 'औद्योगीकरण' कहते है।

केयरचाइल्ड के अनुसार ⟶ "औद्योगीकरण व्यावहारिक विज्ञान के प्रयोग द्वारा औद्योगीकीय विकास की एक प्रक्रिया है।"

मूर के अनुसार ⟶ "आर्थिक प्रक्रिया के निर्जीव स्रोतों के विस्तृत प्रयोग से उत्पन्न प्रक्रिया औद्योगीकरण है।"

औद्योगीक क्रांति सर्वप्रथम 'इंगलैण्ड' मे हुई। औद्योगीक क्रांति ने भारतीय संरचना पर गहरा प्रभाव डाला।

औद्योगीकरण का भारतीय ग्रामीण-
समुदाय पर प्रभाव: -

1. पारिवारिक विघटन ⟶
औद्योगीकरण के कारण विभिन्न व्यक्ति काम करने के लिए अपने क्षेत्र से दूर उद्योगो मे चले जाते है जिससे पारिवारिक विघटन होता है

2. एकाकी परिवारो में वृद्धि -
औद्योगीकरण के कारण जब व्यक्ति रोजगार प्राप्त करने के लिए उद्योगो मे जाता है तो वहाँ सीमित आवासीय स्थल होते है फलस्वरूप व्यक्ति एकाकी परिवारो की ओर झुकता है

3. जाति के महत्व में कमी -
विभिन्न उद्योगो मे काम करने वाले मजदूर भिन्न-भिन्न जातियो के होते है। औद्योगीकरण के कारण जातीय बन्धनो मे शिथिलता आ जाती है।

4. नगरीकरण -
औद्योगीकरण नगरीकरण को प्रोत्साहन देता है जहाँ उद्योग धन्धे स्थापित होते है वहां गाँवो से आकर विभिन्न लोग बस जाते है

5. अल्पकाल मे उत्पादन वृद्धि -
औद्योगीकरण मे मशीनो की सहायता से अल्पकाल मे उत्पादन को तीव्र बनाया जा सकता है।

प्रश्नः- 24

उत्तरः-

सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ :-

सामाजिक स्तरीकरण समाज का खण्डात्मक विभाजन है। प्रत्येक समाज मे आयु, लिंग, धन, योग्यता, जाति के आधार पर विभाजन होता है समाजशास्त्र मे इसी विभाजन को 'सामाजिक स्तरीकरण' कहा जाता है। सामाजिक स्तरीकरण समाज को विभिन्न स्तरो मे विभाजित करता है। व्यक्ति को भी स्तरीकरण जाति के आधार पर अलग-अलग करता है। संक्षेप मे हम कह सकते है कि सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय समाज का विभिन्न स्तरो मे विभाजन है।

सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएं :-

1. पद सोपान क्रम -
सामाजिक स्तरीकरण मे प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित पद होता है पद के आधार पर ही उसे सम्मान मिलता है। सामाजिक स्तरीकरण की सर्वप्रमुख विशेषता इसमे निहित सामाजिक स्तरीकरण मे पद सोपान क्रम है।

2. कार्य की प्रधानता →

सामाजिक स्तरीकरण मे कार्य की प्रधानता पायी जाती है प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्य के अनुरूप ही सम्मान मिलता है। उच्च काम करने वालों को उच्च सम्मान निम्न कार्य करने वालों को निम्न सम्मान मिलता है।

3. वर्गीय अन्तः निर्भरता →

सामाजिक स्तरीकरण मे वर्गों मे अन्तः निर्भरता पाई जाती है प्रत्येक वर्ग अपनी सेवाएँ दूसरे वर्गों के सदस्यों को उपलब्ध कराती है इस प्रकार इसमें वर्गीय अन्तः निर्भरता पायी जाती है।

4. सार्वभौमिक प्रकृति →

सामाजिक स्तरीकरण प्रत्येक समाज मे पाया जाता है। यह किसी-न-किसी रूप में सब जगह पाया जाता है। सामाजिक स्तरीकरण की प्रकृति सार्वभौमिक है।

5. निश्चित भूमिका →

निश्चित भूमिका स्तरीकरण में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका निश्चित होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है।

प्रश्न :- 25

उत्तरः —

(क) उपनिवेशवाद भूमण्डलीकरण व्यवस्था का एक भाग था। उपनिवेशवाद उस व्यवस्था का एक भाग था जिसे पूँजी, कच्ची सामग्री ऊर्जा और बाजार के नये स्रोतों और एक ऐसे संजाल की व्यवस्था थी।

(ख) भूमंडलीकरण की आम पहचान है लोगों का बड़े पैमाने प्रवसन।

(ग) गिरमीटिया मजदूर जहाजों में भरकर एशिया, अफ्रीका और उत्तरी-दक्षिणी अमेरिका के दूरवर्ती भागों में ले जाया जाता था

प्रश्न :- 17

बाजार एक सामाजिक संस्था है। 'एली' बाजार की आधुनिक तरीके से परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि बाजार से आशय उस समस्त क्षेत्र से है जिसमें किसी वस्तु-विशेष की मूल्य-निर्धारण करने वाली शक्तियाँ कार्यशील होती है। बाजार शब्द आवश्यक नहीं किसी स्थान का बोध कराए वरन् यह हमेशा उसके क्रेता-विक्रेताओं से सम्बन्धित होता है। बाजार में निरन्तरता का तत्व पाया जाता है।